अध्याय तीसरा

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढाय नमः॥

"हे श्रीसिद्धारूढ स्वामीजी, आप दीन जनों के रखवाले हैं। आप प्रेमपूर्वक भक्त जनों का भवभय हरते हैं। जब आप अपने सतगुरुजी की खोज करने निकले, तब आप ने रास्ते में बहुत जनों को सतगुरुजी की खोज करने का मार्ग दिखाया|"

श्रीसिद्धारूढ स्वामीजी की जयजयकार हो। आपका चिंतन करने से सब व्यथाएँ नष्ट हो जाती हैं तथा मन आनंदित हो उठता है और ऐसे लोगों का भवभय से आप ही रक्षण करते है| जिनके आप सतगुरु हैं, भला उन्हें इस संसार से क्या भय? जो लोग किसी भी फल की अपेक्षा न रखते हुए, मन ही मन आपको भजते हैं, आप उनके समर्थक बन जाते है। कुछ भक्तगण व्यर्थ ही तीर्थयात्रा करने का परिश्रम उठाते हैं। अगर ऐसे भक्तगण आपका ध्यान करें, तो आप उनके हृदय में प्रकट होकर उनका सही रुपसे मार्गदर्शन करके उनको आप के चरणों तक पहुँचाते है और इस पद को प्राप्त करने के पश्चात सर्व चिंताएँ नष्ट हो जाती हैं, बुद्धि ब्रह्मानंद में लीन हो जाती है और ऐसे जनों के लिए इस संसार की चिंताएँ जैसे खत्म हो जाती हैं और अपने आप उन्हें मुक्ति प्राप्त होती हैं। हे दयालु सतगुरुनाथजी, जिन चरणों में शीश रखने से इस संसार का भय नष्ट हो जाता है, आप के उन चरणों में मुझे जगह दीजिए, जिससे मेरी आत्मा पूर्णरूप से भय से मुक्त हो जाएगी।

अस्तु. प्रतिदिन कुलगुरु श्रीवीरभद्र स्वामीजी जब वेदांत पर प्रवचन देने आते, तब बाल सिद्ध अपने माता की गोद में बैठकर बडे आदरभाव से उसे श्रवण करता था। इसीप्रकार एक दिन प्रवचन के समय, सांसारिक जनों में वैराग्य की भावना की महिमा बढ़ाने के लिए वीरभद्र स्वामीजी ने कहा, "जब प्रलय आएगा, तब यह पृथ्वी सागर में गल जाएगी, मेरु पर्वत जमिन दोज हो जाएगा, पंचमहाभूत तथा स्वर्ग, पाताल आदि अनेक लोक (जहाँ देवीदेवताएँ बसते हैं) नष्ट हो जाएँगे। जब ऐसी स्थिति होगी, तब जो मनुष्य स्वयं को अपना शरीर समझता हो, उसकी हालत क्या होगी? जो मनुष्य इस पृथ्वी पर स्थित हर सुख

का भोग लेने की भ्रांति में रहता हो, ऐसी भ्रांति को क्या कहें?" यह वाक्य सुनते ही बाल सिद्ध ने पूछा, "स्वामीजी, जब आप कहते है की प्रलयकाल में सबकुछ नष्ट हो जाता है, तब आकाश कैसे नष्ट होगा?" श्री वीरभद्र स्वामीजी ने कहा, "हे बालक, जो स्वयं अपने अनुभव के ज्ञान से परिपूर्ण हो, ऐसे सतगुरुजी से ही यह प्रश्न पूछना चाहिए।" कुलगुरुजी के ये शब्द सुनकर बाल सिद्ध ने ऐसे ब्रह्मज्ञानी सतगुरुजी की खोज करने का मन ही मन निश्चय कर लिया।

दूसरे दिन, घर में बिना किसी को सूचित किए, सिद्धनाथ घर छोडकर सतगुरुजी की खोज में निकल पडा। चलते चलते रास्ते में, उसे उसके मित्र सोम और भीम से भेंट हुई। उन्होने सिद्ध से पूछा, "अकेले कहाँ निकल पडे, भाई?" ऐसा प्रश्न सुनते ही सिद्ध ने कहा, "इस समस्त संसार एक ना एक दिन नष्ट होना ही है। यह सब जानने के पश्चात, यहाँ रहने का क्या लाभ? हरएक मनुष्य ने शरीर के रहते हुए अपना भला साधने की भरसक कोशिश करनी चाहिए। सतगुरुजी से शिक्षा पाए बिना, स्वयं का भला साधने के सारे प्रयत्न व्यर्थ ही हो जाते हैं, इसीलिए अब मैं जल्दी में सतगुरुजी की खोज में निकला हूँ।" उन दोनो ने कहा, "अरे सिद्ध, बचपन में इस तरह की बातें क्यों करें? ऐसी बातें करना बुढ़ापे में शोभा देता है।" सिद्ध ने कहा, "इस प्रकार उपासना करना बुढ़ापे में नामुमकीन है। जवानी में काम, क्रोध आदि शत्रुओं के कारण मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है। जिससे वह स्वयं की आत्मा का असली रूप भूलकर बहुत दुख और संकटों का सामना करता है। जवानी में इंद्रियों से प्राप्त होने वाले सुखों का उपभोग लेने के कारण बुढ़ापे में भी वही यादें हमेशा मन में रहती हैं, उसी प्रकार विविध प्रकार की चिंताओं के कारण मन में अच्छे विचार बिलकुल नही आते। मन बहुत चंचल हो जाता है। साथ में मृत्यु का भय मनुष्य को हमेशा डराता रहने के कारण वेदांत का ज्ञान श्रवण करके भी व्यर्थ ही हो जाता है। और जीवात्मा निरंतर तड़पता रहता है। इसीलिए, बचपन में जब मन शुद्ध होता है, उसी समय ऐसे आत्मज्ञानी सतगुरुजी की खोज करनी चाहिए। ऐसे सतगुरुजी से दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात ज्ञान की प्राप्ति में मनुष्य को व्यस्त रहना चाहिए।" बाल सिद्ध की ये बातें सुनकर उन दोनों के मन भी परिवर्तित हो

गए और उन्होने कहा, "ठीक है सिद्धनाथ, हम दोनो भी तुम्हारे साथ चलते हैं। सतगुरुजी की शरण में जाकर उत्तम प्रकार का आत्मज्ञान प्राप्त करने के पश्चात वापस लौटकर हम हमारे घर के कामकाज करेंगे।" सिद्ध ने उनके सुझाव को स्वीकार कर लिया और वे तीनों चल दिए।

इसी प्रकार चलते चलते वे तीनों एक गाँव पहुँचे। सोम और भीम को बहुत भूख लगी थी। उन्होने कहा, "सिद्ध, हमें बहुत भूख लगी है। यहाँ हमें कौन भोजन देगा?" सिद्ध ने कहा, "शरीर की चिंता मत कीजिए। अपने हृदय में स्थित परमात्मा का हमेशा ध्यान कीजिए। उस ध्यान के अमृत का सेवन करते ही तुम्हारे जीवात्मा को संतोष प्राप्त होगा। ऐसी तृप्ति तो आपको भोजन करने से भी प्राप्त नही होगी। यह समझे बिना ही आप भोजन माँग रहे हो। अजी, जिस परमात्मा ने हमें यह शरीर प्रदान किया है, वही उसका पोषण भी करेगा।" उसकी बातें सुनकर दोनो ने कहा, "हम जानते हैं की तुम सभी शास्त्रों में माहिर हो! लेकिन जब मनुष्य के प्राण भूख से तडपने लगते हैं, तब उसे अन्न न मिले तो वह कुछ भी नही कर पाता। 'पराशरस्मृति' में लिखा गया है की मनुष्य के प्राण केवल अन्न के आधार से ही टिकते है और जब प्राण तृप्त हो जाते हैं तभी मन भी शांत हो जाता है। उसके पश्चात ही मनुष्य के मन में अन्य विचार आते हैं।" सिद्ध ने कहा, "तुम यह अच्छी तरह से जानते हो की दयालु ईश्वर इस जगत के सभी प्राणियों का पालन करते है। ऐसे ईश्वर को भूलकर केवल अन्न के लिए क्या आपको दुखी होना चाहिए? भूख लगना स्वाभाविक नही है, जब आपका मन भूख की ओर मुडता है, उसी समय आपको भूख का एहसास होता है। इसीलिए आप अपने मन को दूसरी जगह पर केंद्रित कीजिए, तभी आप भूख पर विजय पा सकेंगे। यह केवल ध्यान करने से ही प्राप्त हो सकता है, जिससे भूख और दुख नष्ट हो जाते हैं। इनपर अन्य कोई भी इलाज नही चलता, क्योंकि ध्यान करते समय प्राण स्थिर हो जाते हैं, जिससे पेट में स्थित भूख की ज्वाला भडकती नही और भूख शांत होकर जीवात्मा को उस की बाधा नही पहुँचती।"

इस प्रकार के सिद्ध के अमृत मधुर बोल सुनकर उनका मन शांत हुआ और तत्पश्चात वे तीनों एक गाँव में स्थित नंदी के मंदिर में पहुँचे। बहुत देर

तक चलने के कारण थके हुए सोम और भीम मंदिर के एक कोने में लेट गए। सिद्ध ने नंदी की सुंदर मूर्ति देखी और वह उसपर सवार हो गया। नंदी पर सवार सात साल का बाल सिद्ध बहुत सुंदर लग रहा था। थोड़े ही समय में मंदिर का पुजारी वहाँ पधारा और नंदी की मूर्ति पर सवार सिद्ध को देखकर बोला, "हे बालक, तुम कौन हो और किसके पुत्र हो? नीचे उतर जाओ। भाई, ईश्वर के प्रति जो भक्ति और भय होता है, इनको तुम कहाँ भूल आए?" सिद्ध ने कहा, "मेरी भक्ति तथा भय सबकुछ परमात्मा में ही हैं। परंतु, ऐसा प्रतित होता है की आपने अपनी भक्ति तथा भय केवल एक पत्थर की मूर्ति में रखी है|" सिद्ध के बोल सुनकर वह सोच में पड़ गया। उसे देखकर सिद्ध मुस्कराने लगा। तब पुजारी बोला, "ठहर जा, तुम्हे इसका दंड मिलना ही चाहिए।" इतना कहकर गाँव में जाकर अनेक गाँववालों को साथ लेकर वह फिर मंदिर में आया। सभी गाँववाले सिद्ध को नंदी पर विराजमान देखकर बहुत क्रोधित हुए और बोले, "अब हम तुम्हे नीचे उतारकर बहुत पीटेंगे," ऐसा कहकर वे उसके निकट आए। लेकिन सिद्ध मुस्कराता हुआ वही बैठा रहा। तब एक गाँववाला आगे बढ़ा और जब उसने सिद्ध को मारने के लिए अपनी बंद मुट्ठी उपर उठाई तब दीवार पर लगे एक कीले से टकराकर उसकी मुट्ठी से खून बहने लगा। तब उसके पीछे खड़े लोगों ने कहा, "भाई, क्यों इतनी मगरूरी से भगवान की मूर्ति पर सवार होकर बैठे हुए हो?" मंद मंद मुस्कराते हुए बालयति सिद्ध ने कहा, "अब बताईए की पीठ पर सवार होनेवाला या पीठ पर सवार होनेवालों को उठानेवाला, इन दोनों में कौन महान है? जिनके मन में किंचित भी भक्तिभाव नही है, ऐसे लोगो ने इस मूर्ति की पूजा करने के कारण इस स्थित ईश्वरतत्व पूर्णरुप से नष्ट होकर यह केवल एक पत्थर बनके रह गया है। इसलिए इस पत्थर में प्राण प्रतिष्ठा करने हेतु मैं उसपर सवार हुआ हूँ।" उसके ज्ञानसम्पन्न हृदय से निकले हुए वे अमृततुल्य मधुर शब्द सुनकर गाँववाले दंग रह गए और आपस में बोलने लगे, "उसके ये शब्द साधारण नही हैं। हालाँकि यह एक बालक के समान प्रतित हो रहा है, फिर भी बड़ा होकर यह एक महापुरुष बनेगा क्योंकि यह एक ज्ञान का स्वयंप्रकाशित सूरज ही है।" ऐसा कहकर सभी ने उसके पाँव छू लिए। तब सिद्ध ने कहा, "लोगों, सुनिए, संतमहंतों जैसे सच्चे महात्माओं की पूजा ही उत्तम

प्रकार की पूजा है। उसकी तुलना में मूर्तिपूजा को कनिष्ठ माना गया है। अपने सभी श्रुतिस्मृतियों में (वेदशास्त्रों में) ऐसा स्पष्ट रुप से कहा गया है की परमात्मा इस धरती पर महात्माओं के रुप में प्रकट होता है। जिस प्रकार गर्भवती स्त्री को अन्न देने से उसके गर्भ में स्थित जीवात्मा तृप्त होता है, उसी प्रकार महात्मा की पूजा करने से परमात्मा संतुष्ट होता है।" ऐसे मीठे बोल सुनकर सभी गाँववाले विस्मित हो गए। इस महात्मा की पूजा करने हेतु वह जल्दी से घर गए। यह खबर पूरे गाँव में फैलने के कारण, सभी गाँववाले थालियों में नैवेद्य भरकर तेजी से सिद्ध के पास पहुँचे। नंदी पर सवार हुए सिद्ध को देखकर गाँववालों के उस मेले में स्थित, मर्द, नारियाँ और बालक, सभी आनंदित हो उठे। सब ने थालियों में भरकर लाई हुई भोजन सामग्री सिद्ध के आगे रख दी, यह देखते ही भीम और सोम वहाँ दौड़ते हुए पहुँचे। उन्हें देखकर सिद्ध ने कहा, "आप ने देखा की नही, ईश्वर ने यहाँ हमारे लिए ही इसप्रकार यह भोजन भेजा है। इसलिए अब ईश्वर का नाम लेकर आप अपनी भूख को मिटाइए।" उन दोनों ने भोजन आरंभ किया। सिद्धनाथ ने भी थोड़ा सा भोजन सेवन किया। उसपर उसने कहा, "यह समय लोगों की संगत करने योग्य नही है," इतना कहकर इशारे से भीम और सोम को बुलाकर, लोगों की नजर बचाकर सिद्ध वहाँ से तेजी से निकल पड़ा। चारो ओर अंधेरा होने के कारण वे धीमी गति से चलते रहे। अंधेरे से डरकर सोम ने कहा, "मेरे मित्र सिद्ध, तुम हमें कहाँ ले जा रहे हो? हम इस घने जंगल में फँस गए है और अंधेरे के कारण रास्ता भी दिखाई नही पड़ रहा है।" उसपर भीम ने कहा, "सोम, तुम डरना मत। ईश्वर हमेशा हमारे पास ही है और वही हमारी रक्षा कर रहा है, इसलिए हमारी पूरी जिम्मेवारी उसपर सौंपकर हम अपनी राह पर चल पड़ेंगे। वही अपना सच्चा मित्र है।" यह सुनकर सोम शांति से चलने लगा। वह हर कदम भयभीत होकर बढ़ाता हुआ चल ही रहा था की इतने में उसके पाँव में काँटा चुभने से वह वहीं खड़ा रोता रहा। तब उसने कहा, "सच कहूँ, मेरा यहाँ आना ही गलत साबित हुआ। हाय राम, अब मैं क्या करुँ? अगर मैं जिंदा बच पाया, तब मैं ऐसे लोगों की संगत कभी नहीं करुँगा।" तत्पश्चात, सिद्ध भीम और सोम का हाथ पकड़कर उन्हे जंगल में अपने साथ ले जाने लगा। रात का समय और जंगली जानवरों

की बहुत करीबी से सुनाई देनेवाली भयानक गर्जनाएँ सुनकर भीम ने कहा, "सिद्ध, मुझे बहुत डर लग रहा है| किसी तरह से हम अपने गाँव लौटेंगे। इस रास्ते से चलना मुझसे संभव नही होगा। तुम्हे यह कहते हुए भी मुझे रोना आ रहा है।"

उन दोनों की दारूण निराशा देखकर सिद्ध ने कहा, "अरे! सतगुरुजी को खोजने का मार्ग बहुत कष्टकारक होता है। उस समय हमे अपना देहाभिमान (शरीर से होने वाली ममता) कतई काम नही आता। जनमों के बाद जनम प्राप्त होने के कष्टों की तुलना में हमारे शरीर को प्राप्त होनेवाले कष्ट मामूली हैं। केवल आत्मज्ञान की प्राप्ति से ही ऐसे जनमों से मुक्ति मिलती है, जो सतगुरुजी से हमे प्राप्त होता है। सतगुरुजी का दास होना तभी संभव होगा जब शरीर की पीड़ा के प्रति हमारे मन में उदासीनता होगी| सतगुरुजी का दास हुए बिना उनकी कृपा तथा उपदेश प्राप्त नही होते। सतगुरुकृपा तथा उपदेश के प्राप्त होने के उपरांत जिस देहबुद्धि (शरीर ही आत्मा है ऐसी प्रतीति होना इसे देहबुद्धि कहते है) के कारण यह जीवात्मा जन्ममृत्यु के चक्र में फँस जाता है तथा इसी देहबुद्धि के कारण संसारिक दुख भी प्राप्त होते हैं| सतगुरुजी मन में बसते हुए मुमुक्षु (मोक्षप्राप्ति की लालसा रखनेवाला) को बाहरी दुनिया का भय दिखाकर उसकी परीक्षा लेते हैं और उस परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवाले पर ही कृपा करते हैं। जो साधारण दुख से भी भयभीत होकर चिरंतन सुख देनेवाले मार्ग को ठुकराता है ऐसे डरपोक मनुष्यपर सतगुरुजी कल्पान्त तक भी कृपा नही करते|" उसके ये गंभीर बोल सुनकर दोनो ने कहा, "अरे भैया! तुम्हारी बातें हमें पसंद है। गुरुप्राप्ति आसान हो इसलिए जिस शक्ति के बलपर साधना करनी पड़ती है वह हमारे पास नही है। यह मार्ग तुम्हारे जैसे महापुरुष के लिए है, हमारे लिए नही। अब हमें गाँव लौटने का रास्ता दिखाओ, क्योंकि तुम्हारे साथ आगे चलने में हमें भय लग रहा है|"

तब सिद्ध ने उन्हे बायी दिशा में एक ज्योति दिखाई, जिसे देखकर वे दोनो आनंदित हुए और उस दिशा में चलने लगे। कुछ समय के बाद वे एक गाँव पहुँचे और वहाँ के एक मंदिर में थकेमाँदे सो गए। वह एक पुराना जीर्ण मंदिर था| बाहर जोरों से बारिश हो रही थी। उसी समय उस मंदिर की एक

दीवार ढह गई। भीम और सोम चौंककर जग गए और डरते हुए बोले, "केवल सिद्ध से मित्रता करने के कारण आज हमारी यह दुर्दशा हुई है! अब हम इस संकट से बच पाते हैं या नही यही हमारे समझ में नही आ रहा है।" यह सुनकर सिद्ध ने कहा, "जब हम सतगुरुजी की खोज में निकले हुए हैं तब हम इस शरीर की चिंता क्यों करें? आप दोनों ने गाँव लौटने की आशा की और अब हम गाँव तक पहुँच गए हैं, फिर भी आप का दुख कम नही हुआ। इसका यही अर्थ हुआ की यद्यपि आप की चाह (चहेता विषय) पूरी हुई है फिर भी आप का मन किसी अन्य विषय (वस्तु) की आशा करने लगा| इसीलिए अकलमंद मनुष्य को निग्रहता पूर्वक विषय का दास नही होना चाहिए।" इतनेमें बारिश थम गई। भीम और सोम दोनों को भूख लगी थी, इसलिए दोनों ने गाँव में जाकर भिक्षा माँगने का निश्चय किया| उस समय सिद्ध सोया हुआ था| वे दोनो गाँव के किसी घर गए थे की उस घर के घरवाले ने उन दोनों को देखा और कहा, "ये दोनों निश्चित ही चोर हैं। परसो हमारी चोरी हुई भैंस इन्होने ही चुराई होगी। अब साधुसज्जनों के भाँति मासूमियत दिखाते हुए यहाँ नजर रखने के लिए आए हैं|" उन दोनों ने कहा, "अजी! हम चोर नही हैं। अभी अभी हम इस गाँव आए हैं। केवल भूख के मारे भिक्षा माँगने हेतु हम आए हैं। कृपा करके हमें थोड़ी सी भिक्षा दीजिए|" उनके ये बोल सुनकर वह घरवाला और भी उत्तेजित हो उठा और कहने लगा, " अच्छा, तो भिक्षा चाहिए आपको! जरा रुक जाईए, अभी लेकर आता हूँ।" उसका भड़काव देखकर वे दोनो भयभीत होकर भाग गए। रास्ते में पहरा देनेवाले सिपाहियों ने उन्हे पकड़ लिया और पूछा, "इस तरह आधी रात मत टहला करो| आज की रात उस टूटे हुए मंदिर में बिताकर कल सुबह आप यह गाँव छोड़कर चले जाईए। अब चलिए।" उसके उपरांत बहुत दुखी होकर वे दोनो जब मंदिर पहुँचे तब निजानंद में लीन सिद्ध ने उन्हे कहा, "आप दोनो ईश्वर पर भरोसा किए बिना गाँव में भिक्षा माँगने हेतु चले गए। मैं यहाँ शिवजी की ध्यानधारणा में मग्न था की मंदिर के पुजारी भगवान को चढ़ाने के लिए नैवेद्य लेकर आया। भगवान को नैवेद्य चढ़ाने के बाद उसने मुझे भोजन दिया। आप दोनो भूख से तड़पते होंगे, इसलिए मैं ने वह भोजन आपके लिए बचाकर रखा हुआ है। मैं जानता था की आपको गाँव में

भिक्षा नही मिलेगी।" उन दोनों ने कहा, "हे भगवान, हमारी रक्षा कीजिए। दयालु भगवान को भूलकर हमारा जीवन व्यर्थ हो गया।" उसके उपरांत तीनो ने मिलकर खुशी से भोजन ग्रहण किया। रातभर वही ठहरे। दूसरे दिन सुबह उठने के बाद भीम और सोम ने कहा, "भैया! सिद्ध! हम है पतित और दीन लोग! सतगुरुजी की खोज करने का मार्ग बहुत कठीन है और हमारा मन निश्चय करने में पूरी तरह से असफल है| इस तरह जंगलों में भटकना हम से नही होता। सही समय पर अन्न जल देने वाले हमारे मातापिता की हमें बार बार याद आती है।" ऐसा कहकर वे दोनो गिड़गिड़ाने लगे। तब सिद्ध ने कहा, "सतगुरुजी की खोज करने के लिए जिस अधिकार की आवश्यकता होती है, वह आपके पास नही है। अत्यंत परमपवित्र ऐसा यह सतगुरुमार्ग खोजने के लिए अत्याधिक दुख तथा कष्ट सहने पड़ते हैं। जिनकी देहासक्ति नष्ट नहीं हुई हो, उनके लिए ऐसे कष्ट सहना असंभव हो जाता है। अब आप दोनो घर जाईए और आराम से अपनी घरगृहस्थी सँभालिए। हृदय में स्थित ईश्वर की पूजा करते रहिए, जिससे आप भी परमार्थ के अधिकारी बन जाएँगे।" उसके ये शब्द सुनकर भीम तथा सोम दोनो ने सिद्ध के चरणस्पर्श करके उसको वंदन किया और वे फिर अपने गाँव लौट चले। "आपके मन की वृत्ति गुरुसेवा करने के लिए तत्पर होने योग्य बन जाए तथा आपकी मनोकामना सफल हो।" इस प्रकार उन्हे आशिर्वाद देकर सिद्ध सतगुरुजी की खोज में आगे निकल पड़ा। श्रोतागण, अब आप अगले अध्याय की कथा पर ध्यान दीजिए। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ कथामृत का मधुरसा यह तीसरा अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढचरणारविंदार्पणमस्तु ॥